महत्त्वपुर्ण:

अगर आप को एलटीबीआई या टीबी रोग हुआ हो तो एचआईवी का परीक्षण भी करवा लें। और यदि आप को एचआइवी हो तो टीबी का परीक्षण करवा लें।

टीबी और एचआइवी / एड्स (HIV/AIDS)

एचआइवी /एड्स (HIV/AIDS) क्या है?

एचआइवी एक ऐसा संक्रमण है जो आप के शरीर के प्रतिरक्षा तन्त्र (इम्युन सिस्टम) को कमज़ोर बना देता है। बहुत ज़्यादा बढ़ जाने पर एचआइवी (HIV) को एक्वायर्ड इम्युनो-डेफिशियन्सी सीन्ड्रोम (एइड्स -AIDS) कहते हैं।

एचआइवी (HIV) इन से फैल सकता है:

- गर्भ-निरोधक टोपी के बिना संभोग करने से (योनि, मौखिक या गुदाद्वार का संभोग)
- सिरिंज और / या सूई बाँटना, या गोदना बनाते समय, इलेकट्रोलिसिस में, एक्यूपंक्चर या चमडी में छेद करते समय उपकरण को जीवाणुहीन (steril) न करने से
- जिस के संक्रमण की चिकित्सा न की गई हो ऐसी माँ के द्वारा अपने अनजन्मे या नवजात शिशु को, या जिसे वह अपना दूध पिला रही हो उस शिशु को

टीबी / एचआइवी का सह-संक्रमण (कोइन्फेक्शन) क्या है?

जब किसी व्यक्ति पर टीबी और एचआइवी, दोनों का संक्रमण हुआ हो तो उसे टीबी / एचआइवी का सह-संक्रमण (कोइन्फेक्शन) कहते हैं। इन दोनों रोगों का यह बहुत ही गंभीर मेल है क्योंकि उन में से हर एक अकेला रोग जो नुकसान कर सकता है उस से बहुत ही ज़्यादा नुकसान दोनों मिल कर करते हैं।

एचआइवी का संक्रमण टीबी पर कैसे असर करता है?

एचआइवी इन्सान का प्रतिरक्षा तंत्र कमज़ोर कर देता है और उसे टीबी के जीवाणुओं से संक्रमित करने में, या फिर उसे सक्रिय टीबी रोग में परिवर्तित करने में आसानी कर देता है। अप्रकट टीबी संक्रमण (LTBI) के टीबी रोग में पलटने में एचआइवी संदूषण सब से गंभीर खतरनाक तत्त्व (रीस्क फेक्टर) है।

टीबी / एचआइवी के सह-संक्रमण वाले लोगों की चिकित्सा करनी क्यों महत्त्वपुर्ण है?

जिन्हें एचआइवी न हो उन की तुलना में जिन पर टीबी और एचआइवी, दोनों का संक्रमण हुआ हो उन्हें अपने जीवन में कभी भी सक्रिय टीबी रोग होने की संभावना ५० गुना ज़्यादा होती है। टीबी के जीवाणु एड्स की प्रगति को तेज़ी से बढ़ा देते हैं। दुनिया में एड्स से हो रही मौतों में से हर साल लगभग एक तिहाई मौत एचआइवी और टीबी वाले लोगों में होती है और उस का सब से आम कारण टीबी है। कुछ एचआइवीग्रस्त लोगों के लिये उन्हें सब से पहला गंभीर रोग टीबी का हो सकता है।

क्या मुझे टीबी और एचआइवी की चिकित्सा एक साथ मिल सकती है?

एचआइवी और टीबी वाले लोगों के दोनों रोगों की चिकित्सा एक साथ हो सकती है। इस के लिये ऐसे डॉक्टर के सघन अनुवर्तन की आवश्यकता है जो संक्रामक रोगों का विशेषज्ञ हो।